Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIV (54), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भोज रचित सरस्वती कण्ठाभरण तथा श्रृंगार प्रकाश

डॉ. पी. एस. बघेल*

* प्राध्यापक (संस्कृत) पीएम एक्सीलेंस शहीद भीमा नायक शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बड़वानी (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – सरस्वती कण्ठाभरण सन् 1887 में बनारस में के.एम.सीरीज द्वारा 1934 में प्रकाशित हुआ। इसके साथ ही जगद्धर के राजा राजसिंह द्वारा प्रकाशित टीका भी प्रकाशित हुई है।

वस्तुत: यह ग्रन्थ सरस्वती कण्ठाभरण एक बड़ा ग्रन्थ रहा है जो संग्रहात्मक रूप में प्रकाशित किया गया। प्रस्तुत काव्य पाँच परिच्छेदों में विभक्त है।

प्रथम परिच्छेद में काव्य प्रयोजन, काव्य लक्षण; काव्यभेद, 16 पद दोष, 16 वाक्य दोष, 16 काव्यार्थ दोष, 24 शब्द गुण, 24 वाक्यार्थ गुण निरूपण है।

दूसरे परिच्छेद में 24 अदाहरण सहित शब्दालंकार, जाति, रीति, वृत्ति, छाया, मुद्रा, गुंफना शय्या, यमक, श्लेष, पहेलिका आदि दिये हैं।

तीसरे परिच्छेद में 24 अर्थालंकार, जाति, विभावना, हेतु, अहेतु, सूक्ष्म, उत्तर, विरोध, संभव, अन्योयन, परिवृत्ति, निदर्शना, भेद, समाहित, भ्रान्ति, वितर्क, मीलित, स्मृति, भाव, प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, आगम अर्थापत्ति और अभाव का निरुपण किया गया है।

चतुर्थ परिच्छेद में 24 शब्दालंकारों तथा अर्थालंकारों का विवेचन किया गया है। इसमें उपमा, रूपक, साम्य, संशंय अपन्हुति समाधि, समासोक्ति, उत्प्रेक्षा, अस्तुतप्रशंसा, तुल्योगिता श्लेष जो ब्याजस्तुति के समक्ष होता है, सहोक्ति, समुच्चय, आक्षेप, अर्थान्तरनयास, विशेषोक्ति, परिकर, दीपक, क्रम, पर्याय, अतिशयोक्ति, श्लेष, भभाविक और संसृष्टि का वर्णन है।

पाँचवें परिच्छेद में रसों, भावों, नायकों नायिकाओं तथा उनके उपभेदों की विशेषताओं का वर्णन किया गया हैं।

इस प्रकार कुल मिलाकर 643 कारिकाएँ है। भोज वस्तुत: अग्निपुराण का ऋणि है।

सरस्वती कण्ठाभरण में अधिकांश उद्धरण दण्डी के काव्यादर्श से लिये गये है। इस प्रकार सरस्वती कण्ठाभरण में 1500 से अधिक उदाहरण पूर्ववर्ती कवियों से लिये गये हैं।

भोज ने कालिदास और भवभूति के ग्रन्थों से भी अनेक उद्धरण लिये हैं। इसके अतिरिक्त उस काल के विभिन्न ग्रन्थों से उद्धरण लिये हैं।

भोज के विश्लेषण में एक प्रकार की समानता दिखाई देती है। कुछ स्थान पर अग्निपुराण के उदाहरण भी दशर्ये है। भोजराजकृत श्रृंगारप्रकाश में एक रस ही स्वीकार किया गया है। 'राजा तु श्रृंगारमेकमेव श्रृंगारप्रकाश में यमुररीचकार भोजराज महाराजान्विति।' श्रृंगारप्रकाश में शब्दार्थोसहितौकाव्यं काव्य की परिभाषा दी गई है। श्रृंगारप्रकाश में 36 अध्यायो की सूची दी गई है।

भोज अनेक ग्रन्थों के रचयिता थे। जिसमें भोज ने धर्मशास्त्र पर भी अपने विचारों को व्यक्त किया है।भोज 11 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हुए हैं। भोजप्रबन्ध के अनुसार भोज ने 55 वर्ष तक राज्य किया। भोज का चाचा मुंज 994–997 के बीच में तैलप द्वारा मारा गया था। भोज का उत्तराधिकारी उसका भाई सिंधु राजे सिंधुल बना जिसे इतिहास में नवसाहसांक जैसी,उपाधि से विभूषित किया गया।भोज 1005 के लगभग राजगद्दी पर बैठा।

इसी वर्ष भोज ने सरस्वती कण्ठाभरण और श्रृंगार प्रकाश की रचना की। 1030 से 1050 के बीच उसका अंतिम समय आ गया होगा।

भोज वाक्पतिराज का उत्तराधिकारी बना जिसे परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर की उपाधि मिली।

प्राचीन और मध्यकालीन भारत के सुप्रसिद्ध राजाओं में एक राजा भोज था। वह कवि तथा साहित्य के महान आश्रयदाता था। उसने अनेक मंदिरों का निर्माण कराया।

ऐसा कहा जाता है कि उसने करीब 84 ग्रंथ लिखे। भोज ने काव्यशास्त्र तथा व्याकरण पर सरस्वती कण्ठाभरण नाम ग्रन्थ लिखा। संस्कृत सीरीज त्रिवेदम् में 1937 में प्रकाशित हुआ। सरस्वती कण्ठाभरण के साथ समरागण सूत्रधार नामक 7 हजार श्लोकों का ग्रन्थ भी रचा।

भोज ने अपने प्रवास के दौरान विशिष्ट वर्ग के अड़ाइस भेदों की परिभाषाएँ अनुष्टुप रूप छन्द में दी है। जिसमें प्रियवियोग संभावना आदि रचनाओं पर प्रकाश डाला है। जिसमें देश, काल, कार्य पात्र, औचित्य आदि की चर्चा की है। इसी श्रृंगार प्रकाश ग्रन्थ में काम श्रृंगार का परिचय दिया है। करुण के वर्णन में अनुभावों का सर्वाधिक चित्रण किया है। जहाँ उन्होंने 80 अनुभाव गिनाये हैं। भोज ने पाँच स्कंध में रूपक की सुप्रसिद्ध पाँच संधियों का वर्णन किया है।

श्रृंगारप्रकाश में संयोग श्रृंगार के स्थायी भावों का वर्णन किया है। भोज ने सरस्वती कण्ठाभरण में स्वप्रतिपाद्य सभी मौलिक बातों की चर्चा की है। जिसमें उन्होंने प्रमुख रूप से रस की विस्तारपूर्वक चर्चा की है। श्रृंगार प्रकाश के प्रथम आठ प्रकाशों में अधिकतर व्याकरण संबंधी अधिक चर्चा की गई है।

श्रृंगारप्रकाश में भोज ने काव्यशास्त्र से संबंध रखने वाले प्राय: सभी

प्रमुख प्रसंगों का समावेश किया है। उन्होंने पद और वाक्य का निरूपण करते समय भर्तृहरि के वाक्यपदीय के बहुत से अंशों का उपयोग किया है। वाक्पदीय के ब्राह्मकांड का और अधिक मात्रा में उपपोग किया है। भोज ने शब्दब्रह्म का विवर्त मानकर ही प्रतीयमान और ध्वन्यमान की व्याख्या की है।

'परोमहावाक्यार्थ: अर्थमूर्त्या विपरिणम नादि निधनमखण्ड शब्द ब्रह्मेत्युच्यते।'

अखण्ड: सैष वाकयार्थ: शब्द ब्रह्मेतिगीयते। शब्दब्रह्माणि विष्णात: परं ब्रमह्माधिगच्छति।।

इदमाद्यं पदस्थानं सिद्धिसोपान वर्णनम्।
इयंमाद्यंसो मोक्षमाणानाम जिह्मा राजपद्धति:।।
(वाक्पदी 1-6, पृ. 143)

शृंगार प्रकाश के नवम प्रकाश में भोज ने वाक्य के अंतर्गत पृथक्-पृथक् शब्दों से संबंधित दोषों का वर्णन भी किया है। भोज ने वाक्य के अंतर्गत प्रयुक्त होने वाले शब्दों की सापेक्षिक सत्ता का भी विवेचन किया है। शृंगार प्रकाश में भोज ने दोषों, गुणों और अलंकारों का विवेचन किया है। गुणों का उल्लेख करते हुए उनका अलंकारों से अंतर, अलंकार और उनके तीन भेदों का वर्णन किया है। शब्दालंकार प्रकरण के अंत में 24 शब्दालंकारों के संबंध में कुछ सामान्य जानकारी देने वाली कारिकाएँ शृंगार प्रकाश में जोड़ी गई है। भोज के ग्रन्थों में गुणों और अलंकारों के विवेचन के अन्तर की चर्चा की है।

शृंगार प्रकाश के अंतर्गत ध्वनि प्रकरण में विस्तार से प्रकाश डाला है। शृंगार प्रकाश में काव्य की तीन उक्तियों-वक्रोत्ति, स्वभावोक्ति और रसोक्ति से संबंधित शृंगार प्रकाश में विस्तृत व्याख्या दी गई है। बारहवें प्रकाश रूपक विधान से संबंधित पाँच अवस्थाओं, संधियों और वृत्तियों का विवेचन किया गया है।

शृंगार प्रकाश के तृतीय ग्रन्थ में तेरह प्रकाश अलंकार, शृंगार के धर्म, अर्थ काम और मोक्ष संबंधी चतुर्विध वर्गीकरण से प्रारंभभहोता है विविध के रति के प्रकारों की व्याख्या करता है।

शृंगार प्रकाश में आलंबन विभाव, नामक और नायिका का वर्णन है। शृंगार प्रकाश में ऋतुओं देशों, समय, कलाओं, संस्कारों और प्रसाधनों की विस्तृत आलोचना है। सत्रहवें प्रकाश में रति के अनुभाव वर्णित हैं। पंचम अध्याय में 40-43 कारिकाओं में पृ. 532-537 पर दर्ज हैं।

वाक्य प्रबन्धानुगतोऽयमुक्तो
मया समासेन रस वियोग:।
अथेहऽर्था न विवेचिता:।
पृथम् विभज्ते केचिदुहाह्निन्ते।।
(रसवियोगप्रकाशो, एकादश प्रकाश:।।)

इसके अतिरिक्त विभिन्न अध्यायों में कुछ 95-96 कारिकाओं का उल्लेख है।

कुल मिलाकर अनुराग की समस्त अवस्थाओं को रसान्वय-विभूति नाम दिया गया है। शृंगार प्रकाश के अंत में भोज के अलंकार रस से सम्बंधित कुछ अनुष्टुप छन्द मिलते हैं।

भोज ने आनंदवर्धन की यथासंभव अधिकतम कारिकाओं को स्वीकार किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. साहित्य दर्पण-विश्वनाथ कविराज। सत्यव्रतसिंह (कमलापति त्रिपाठी) चौखंबा सीरीज, वाराणसी।
2. संस्कृत काव्य का इतिहास- पी.वी. काणे, अनुवाद डॉ. इन्द्र चंद्र।
3. आचार्य कृत काव्यालंकार-चौखंबा संस्कृत सीरीज।
4. लोकसंस्कृति-वसंत निरगुणे-म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

****